बेहद के नाटक को स्मृति में रख हर्षित रहना
पुरुषार्थी और अनन्य बच्चों की ही होती पूजा
भविष्य की स्मृति सब दुखों से रखती मुक्त
इस दुनिया में अब थोड़ा समय और रहना
इस खुशी के नशे में रहना ,नयी दुनिया में जाना
अपना सब कुछ धणी को सफल करना
पतितों को दान नहीं करना
स्वयं को सदा ट्रस्टी समझना
न्यारे हो प्रवृति के कार्य में आना
अभिमान ..अपमान की फीलिंग लाता

ॐ शांति!!!
मेरा बाबा!!!